I J R S S I S, Spl Issue (III), July-2020 : 234-238
A Double-Blind Peer Reviewed Journal
OPEN ACCESS
e-ISSN 2347 – 8268 & 2347-8209 (P)
Original Article

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCE AND INFORMATION STUDIES
© VMS RESEARCH FOUNDATIONvvwww.ijrssis.in

संगीत के व्यवसायी वर्ग पर कोविड-१९ के आर्थिक परिणाम

S. C. Chaphekar
Chinmay University, Pune.
*Corresponding Author: swapnilchaphekar@gmail.com

सारांश

कोविड-१९ विषाणु का विश्वभर के हर क्षेत्र पर परिणाम हुआ है। स्वास्थ्य के साथ इसका जिस क्षेत्र पर सबसे गहरा असर हुआ है, वह है अर्थनीति। तालाबंदी के कारण समुचे विश्व की आर्थिक व्यवस्था मानों कुछ काल के लिए थम सी गई। इस से मनोरंजन विश्व भी परे न रह सका। भारत के कलाविश्व में संगीत का बहुत बड़ा स्थान है। कोरोनावाइरस के कारण इस क्षेत्र के व्यवसायी वर्ग पर भी गहरा असर हुआ है। संगीत में प्रस्तुति के साथ ही शिक्षा भी एक महत्वपूर्ण पहलू है और दोनों पर अनेक कलाकार आजीविका के लिए निर्भर हैं। इन दोनों के लिए संगीत के वाद्य बनाने वाला वर्ग उन पर तथा विद्यार्थिओं पर निर्भर है। कार्यक्रमों के आयोजक कलाकार तथा श्रोताओं के बिच एक सेतु होते है , जिन्हें भी आर्थिक कठिनाइयों से गुज़रना पड़ रहा है। साथ ही ऐसे कई व्यवसाय है जो संगीत कला से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े हैं। इन सभी पर आर्थिक परिप्रेक्ष्य में कोविड-१९ के प्रभाव की खोज करना प्रस्तुत शोधपत्र का विषय है।

प्रस्तावना

शालिवाहन शक १९४१ का 'विकारी' नामक संवत्सर विश्व को कोरोना वाइरस का विकार प्रदान करते हुए ख़त्म हुआ।सन २०२० के मार्च महिने से भारत में यह विषाणू फैलना शुरू हुआ।इसका प्रसार रोकने का सबसे पहला व कामयाब तरीका था सामाजिक दूरी या सोशल डिस्टन्सिंग, जिसे लागू करने के लिए भारत सरकार को तालाबंदी (लॉकडाउन) करनी पड़ी , जो चार बार बढ़ाई गई और अब तक कुल दो-ढाई महीने चल रही है।इस समय के दौरान जनता को घर से बाहर निकलने की अनुमति नहीं होती।अत्यावश्यक चीजों की सुविधा छोड़ अन्य सभी सेवाएं , जैसे दफ़्तर, पाठशाला, परिवहन साधन आदि बंद होते है।जाहिर है पूरी जनता को इस बिमारी से बचने के लिए घर पर ही रहना पड़ा और आमदनी के सभी मार्ग बंद हो गए।कोरोना का प्रभाव समाजजीवन पर इतना गहरा और दूरगामी होनेवाला है कि एक समाजविश्लेषक ने कालगणना का 'बी.सी.' संकेत अब 'बिफोर कोरोना' के लिए प्रचार में आ सकता है ऐसा विचार रखा है।सभी क्षेत्रों पर इस के आर्थिक प्रभाव दिखने लगे, तो संगीत क्षेत्र भला इस से कैसे बचता? संगीतजगत भी इस कोरोना काल की वजह से हर तरह से प्रभावित हुआ है।प्रस्तुत शोधपत्र में इस प्रभाव के आर्थिक परिप्रेक्ष्य की खोज की गई है।

शोधप्रणाली

संगीत क्षेत्र के विभिन्न व्यवसायीवर्ग के प्रतिनिधिओंसे दूरध्वनिय साक्षात्कार।

विश्लेषण

संगीत क्षेत्र मोटे तौर पर संगीत-प्रस्तुति और संगीत-शिक्षा इन प्रभागों में विभाजित किया जाता है,किन्तु कलाकार, रसिक श्रोतागण, गुरु, शिष्य, आयोजक, वाद्य उत्पादक तथा विक्रेता आदि सभी

संगीतजगत के अनेक अविभाज्य घटक हैं।इन सभी के आर्थिक व्यवहार देखने के तीन पड़ाव हैं –

1. कोरोनापूर्व काल
2. लॉकडाउन काल
3. लॉकडाउनपश्चात काल

'कोरोनापश्चातकाल' ऐसा शब्दसमूह प्रयुक्त करना इसलिए उचित नहीं क्योंकि वैसे विश्व की निश्चित कल्पना आज के समय में नहीं की जा सकती। उपरिनिर्दिष्ट हर घटक पर कोविड-१९ के परिणाम का विश्लेषण किया गया है।

अ] संगीत शिक्षा क्षेत्र

गुरु और शिष्य यह संगीत शिक्षा के प्रमुख घटक है , किन्तु शिक्षा के विकल्पों के आधार पर इस व्यवहार में अन्य घटक भी शामिल होते है।संगीत की शिक्षा देने के अनेक प्रकार प्रचलित है , उनका वर्णन करने के साथ ही उन पर कोरोना के असर का वर्णन इसप्रकार है -

अ.१. व्यक्तिगत शिक्षा

संगीत को गुरुमुखी विद्या कहा जाता है , इसलिए प्राचीन काल से ही गुरु के सानिध्य में रह कर इस विद्या का ग्रहण किया जाता है।आधुनिक काल में गुरुकुल बहुत ही कम संख्या में हैं किन्तु सभी जिज्ञासु शिष्य अपने गुरु के घर जा कर संगीत सीखते हैं।गुरु को गुरुदक्षिणा के तौर पर मासिक या प्रति कक्षा का निर्धारित शुल्क फ़ीस के रूप में दिया जाता है।कोरोना की वजह से जब लॉकडाउन शुरू हुआ तब गुरु-शिष्य दोनों ने यह शिक्षण कुछ काल के लिए बंद रखना ही उचित समझा। संचारबंदी के कारण शिष्यों का घर से निकलना असंभव था , सरकारी परिवहन व्यवस्था बंद थी , निजी वाहनों की यातायात बंद थी और यात्रा के दरम्यान संक्रमण का ख़तरा था। किन्तु लॉकडाउन जैसेबढ़ने लगा, सभी के मन में सीखने-सिखाने की उर्मि लौट आई।इस काल में मिले ज्यादा समय का सदुपयोग संगीत की शिक्षा तथा रियाझ के लिए करना सभी ने उचित समझा।इस का हल उन्हें ऑनलाइन क्लास में मिला।अपने अपने घर में बैठ कर संगीत की शिक्षा पुनः शुरू हुई।गुरु को फ़ीस डिजिटल पेमेंट से दी जाने लगी।

किन्तु क्या शत-प्रतिशत गुरु-शिष्य इस तकनीक को सिख पाते है और उसका लाभ उठा पाते है ? इस प्रश्न का उत्तर नकारात्मक है।देहातों में जहा इंटरनेट की सुविधा अच्छी नहीं होती, लैपटॉपया स्मार्टफोन सब के पास नहीं होते , वहां के गुरु-शिष्य इस सुविधा का लाभ नहीं उठा पाते।साथ ही बड़ी उम्र और आवश्यक शिक्षा की कमी के कारण भी तकनीक सीखने में कठिनाइयाँ होती है।ऐसे गुरु-शिष्य इस सुविधा से वंचित रह गए है और इसका सीधा असर गुरु के अर्थप्राप्ति पर होने लगा है।क्लास नहीं हुआ तो फ़ीस नहीं दी जाती।जिस गुरु का घर सम्पूर्णतः निजी क्लासेस पर निर्भर है , उसकी आमदनी लगभग बंद होने को है।लॉकडाउन-पश्चात काल में भी घर आ कर संगीत सिखने की उम्मीद कम ही है , क्योंकि कोरोना का ख़ौफ़ गुरु-शिष्य दोनों के मन में है।उस समय जो तकनीक से परे है उनकी आर्थिक चिंता कायम रहेगी।

अ.२. संस्थागत शिक्षा

विश्वविद्यालयों में जो संगीत विभाग है, वहां की पिछले वर्ष की परीक्षाएं पूरी नहीं हुई हैं।माता-पिता छात्रों को फिर से विभाग में कब भेजेंगे यह संदिग्ध है।इस कारण अगले शैक्षणिक वर्ष में छात्रों की संख्या में भारी गिरावट आने की आशंका है।हो सकता है कुछ संलग्न महाविद्यालयों में संगीत विषय अस्थायी रूप से बंद किया जाए , जिस कारण संगीत शिक्षकोंकी नौकरी जा सकती है।विश्वविद्यालयों के संगीत विभाग बंद तो नहीं होंगे किन्तु विद्यार्थिसंख्या की अनिश्चितता उन्हें भी

रहेगी।फलस्वरूप विश्वविद्यालय से उस विभाग को मिलने वाला आय-व्ययक (बजट) घटकर विभाग की गतिविधियां मर्यादित की जा सकती हैं।महाराष्ट्र शासन ने सभी कर्मचारियों के वेतन से २५ से ६० प्रतिशत वेतन की कटौती कर उसे किश्तों में चुकाने की उद्घोषणा की , और मार्च महीने में ऐसा ही किया। बाद में यह निर्णय वापस लिया गया।ऐसा न होता, तो सभी संगीत शिक्षक आर्थिक विवंचना की शिकार बनते।

अ.३. ऑनलाइन शिक्षा

ऑनलाइन संगीत शिक्षा का लाभ कई सालों से विश्वभर के गुरु-शिष्य उठा रहे हैं।स्काइप, झूम जैसे सॉफ्टवेयर इसे आसान बना रहे हैं।इस माध्यम से दुनिया के किसी भी कोने में होने के बावजूद अपने अपने घर में बैठ कर इंटरनेट के माध्यम से संगीतविद्या का आदान-प्रदान हो रहा है।कोरोना के कारण ऐसी ऑनलाइन शिक्षा विशेष प्रभावित नहीं हुई है।ऐसा ज़रूर हुआ है कि ऐसी शिक्षणपद्धति का लाभ लेनेवालों की संख्या बढ़ गई है।प्रत्यक्ष सीखने-सिखाने वालों ने यह रास्ता अपनाया है , यह एक कारण हुआ।दूसरा कारण यह कि , लोगों के पास अचानक से बहुत समय और खालीपन आ गया है , जिसे वह अच्छी तरह से व्यतीत करना चाहते है।काम-काज के कारण अपनी छूटी हुई संगीत-शिक्षा कुछ लोग फिर से शुरू कर रहे हैं , कुछ अपने शौक को पूरा करने के लिए सिख रहे हैं , कुछ अपने बच्चों को व्यस्त रखने के लिए संगीत को एक अच्छा साधन मान रहे हैं , तो कुछ चिंता-तनाव को संगीतात्मक ध्यान से दूर करने की कोशिश कर रहे हैं।कारण कुछ भी हो , ऑनलाइन सीखनेवालों की संख्या बढ़ गई है।लॉकडाउन पश्चात काल में यह चित्र बदल सकता है।इन अस्थायी शिष्यों में से आगे कितने शिष्य संगीत सीखते रहेंगे , कहना मुश्किल है।कोरोना के कारण जल्द ही आर्थिक मंदी आने की भविष्यवाणी अर्थतज्ञों ने की है , जिस कारण शौकिया तौर पर सीखने वाले विद्यार्थियों की संख्या घट सकती है।ऐसे काल में लोग तुरंत आर्थिक लाभ देने वाली विद्याओं में ही निवेश करना उचित समझते हैं, जिस श्रेणी में संगीत नहीं आता।ऐसे समय गुरुओं की आर्थिक विवंचना बढ़ सकती है।

ब] संगीत-प्रस्तुति क्षेत्र

कलाकार, आयोजक और श्रोता यह संगीत -प्रस्तुति क्षेत्र के प्रमुख स्तम्भ हैं । इन सभी वर्गों पर कोरोना का प्रभाव इसप्रकार है -

ब.१. कलाकार

लॉकडाउन काल में संगीत के महफिलों के आयोजन पर रोक लगा दी गई है।इस कारण प्रत्यक्ष महफ़िल संभव नहीं, फलस्वरूप कलाकारों की आजीविका का साधन बंद हो गया है।लॉकडाउन पश्चात भी सामाजिक दूरी रखने की आवश्यकता देखते हुए एक लम्बे समय तक महफिलों का आयोजन होने की कोई संभावना नहीं है।इस काल में कुछ कलाकारों ने फेसबुक लाइव , युट्यूब लाइव आदि समाज-माध्यमों (सोशल मिडिया) पर लाइव महफ़िलें करना शुरू कर दिया है।खुद के घर से ही यह महफिलें करना-सुनना संभव होने के कारण इन्हे बड़ी लोकप्रियता मिली है।किन्तु इसका अर्थकारण क्या है यह देखना इस शोध में जरुरी है।कुछ कलाकार केवल लोगों के सामने दिखते रहें इसलिए खुद ही महफ़िल कर रहे हैं , जिन्हें कोई आर्थिक लाभ नहीं मिल रहा।कुछ संस्थाएं ऐसी महफ़िलों का आयोजन कर रहीं हैं , जो कलाकारों को मानधन तो देती है , किन्तु यह राशि उस कलाकार को प्रत्यक्ष महफ़िल से मिलने वाली राशि की तुलना में बहुत ही कम होती है। कार्यक्रम के इस स्वरुप में टिकट बेचना, प्रायोजक जुटाना मुश्किल होने के कारण यह राशि कम हुई है।जल्द ही ऐसे

कार्यक्रम दर्शकों के लिए सशुल्क कराये जाएंगे।जो कलाकार गुरु भी है , उनको संगीत शिक्षा से आजीविका मिल रही है।

ब.२. संगतकार

कोरोना काल का सबसे ज़्यादा बुरा असर व्यावसायिक संगतकारों की आर्थिक स्थिति पर पड़ा हैं।मंचीय महफ़िलें तो इनके लिए भी बंद हैं किन्तु जो ऑनलाइन महफ़िलें हो रहीं हैं उनके लिए संगतकारों की आवश्यकता नहीं रहीं , क्योंकि वह इलेक्ट्रॉनिक साधनों या ऐप के साथ की जा रही हैं।जो संगतकार अब तक विद्यादान के क्षेत्र में नहीं थे, उनको आने वाले कुछ काल के लिए वह व्यवसाय अपनाना पड़ेगा।

ब.३. श्रोता

श्रोता संगीतजगत के अर्थकारण में दाता-रूप में शामिल होते हैं।आने वाली मंदी के कारण संगीत कला का लोकाश्रय कम होने का डर है।

ब.४. आयोजक–

कलाकार और श्रोताओं को जोड़ने वाली महत्वपूर्ण कड़ी होती है , आयोजक।सामाजिक दूरी के कारण महफ़िलों पर लगाया गया प्रतिबन्ध कब तक चलेगा, इस पर आयोजकों का कोई नियंत्रण नहीं।इस काल में उन की आजीविका का कोई अन्य साधन नहीं।उनके दफ्तरों में काम करने वाले कर्मचारी-वर्ग की नौकरियां खतरे में हैं।कुछ आयोजक ऑनलाइन आयोजन में उतर रहे हैं , जिस से भविष्य में उन्हें कुछ आर्थिक लाभ भी मिलने की संभावना है।

क] वाद्य व्यवसायी

जिन क्षेत्रों में दुकानें या कारखानें शुरू है वहां कलाकारों ने अपने वाद्य रखरखाव के लिए उत्पादकों के पास भेज दिए है।कुछ रसिकों ने शौक के कारण नए वाद्य खरीद लिए है।इन कारणों से वाद्यों के निर्माता और विक्रेता थोड़ा-बहुत विनिमय कर रहे हैं। जब तक महफिलें और क्लासेस फिर से शुरू नहीं होती , उनका आर्थिक गणित घाटे में ही रहेगा।कुछ लोग महफ़िलों के लिए वाद्य किराए पर देते हैं, उनकी आय बंद है।

ड] रेकॉर्डेड संगीत

संगीत निर्देशक लॉकडाउन काल में नए नए धुनों को बनाकर, उन पर काव्य लिखवा रहे हैं और आने वाली फिल्मों के लिए गाने तैयार कर रहे हैं , किन्तु उनका स्टूडियो रिकॉर्डिंग संभव नहीं , इसलिए स्टूडियो की आय भी बंद है। टी.वी. शोज बंद होने के कारण उन में सहभाग लेने वाले वादक कलाकार घर पर बैठे है।कुछ बड़ी कंपनियां और बैंक अपने ग्राहकों को भरोसा और उम्मीद दिलाने के लिए ऐसे गाने तैयार करवा रही हैं जिन्हे गायक घर के स्टूडियो से ही गा सकते है , जैसे एच.डी.एफ.सी. बैंक का 'हम हार नहीं मानेंगे ' या आई.सी.आई.सी.आई. बैंक का 'जयतु जयतु भारतं'।ऐसे गानों में नामचीन कलाकारों को तो आय मिलती है , जिनको इसकी खास ज़रूरत नहीं होती, उनकी बचत तो अच्छी-खासी होती है।सामान्य कलाकारों को इन योजनाओं का लाभ नहीं मिलता। लॉकडाउन पश्चातकाल में सभी पूर्वोपाय करते हुए जब नए गानों का रिकॉर्डिंग किया जाएगा , तब अचानक स्टूडियो का वक़्त मिलना दुर्लभ होगा।सामाजिक दूरी के कारण फिल्मों की शूटिंग भी प्रभावित होगी और संगीतकार-गीतकार-पार्श्वगायक-वादक-अरेंजर-प्रोग्रामर-रिकार्डिस्ट इस वर्ग को कुछ कम ही काम मिलेगा।ऑनलाइन संगीत की वेबसाइट्स को लॉकडाउन काल में अच्छी आय मिल रही है , यह एक ही सकारात्मक पहलु है।

इ] लेखन

महफ़िलें बंद होने के कारण संवाददाताओं और आलोचकों का लेखनकार्य बंद है।घर में बैठे संशोधक पर्याप्त समय मिलने के कारण अच्छी पुस्तकें लिख रहें हैं, जिन्हें लॉकडाउनपश्चातकाल में प्रकाशित किया जाएगा।

निष्कर्ष

कोरोना की वजह से संगीतजगत एक आर्थिक स्थित्यंतर से गुज़र रहा है ।जब की संगीत शिक्षा अन्य विल्कल्पों के माध्यम से चल रही है , संगीत की मंचीय प्रस्तुति पर नकारात्मक प्रभाव हुआ है ।आजीविका के लिए पूर्णतः प्रस्तुति पर निर्भर रहनेवाले व्यावसायिक कलाकार और मुख्यतः संगतकार इस काल में अत्यधिक आर्थिक विवंचना से गुज़र रहे हैं ।संघटन, सरकारी मदद, आजीविका के अन्य विकल्प, प्रौद्योगिकीय साधनों का उपयोग और बदलते हुए समाज के सूक्ष्म निरिक्षण के आधार पर संगीतजगत की पुनर्रचना करने से भविष्य में इस आर्थिक स्थिति को उन्नयन की दिशा दी जा सकती है ।

संदर्भ

Online, ET. (2020, March 31). Maharashtra CM, cabinet to take a 60% pay cut for this month. The Economic Times, P. 1 <https://economictimes.indiatimes.com/news/politics-and-nation/maharashtra-govt-announces-salary-cut-for-its-employees/articleshow/74909311.cms>

देशपांडे, राम. (२०२०, जून १२). दूरध्वनिय साक्षात्कार. (शास्त्रीय गायक तथा गुरु)

पाटील, शेखर.(२०२०, जून १४). दूरध्वनिय साक्षात्कार. (तबलासंगतकार)

मिस्त्री, नंदकुमार.(२०२०, जून १६). दूरध्वनिय साक्षात्कार. (श्रोता)

चम्पानेरकर, विशाल.(२०२०, जून १३). दूरध्वनिय साक्षात्कार. (अंतरंग कला प्रतिष्ठान, आयोजक)

म्युझिकल्स, ॐ नादब्रह्म. (२०२०, जून १५). दूरध्वनिय साक्षात्कार. (वाद्य उत्पादक तथा विक्रेता)

चम्पानेरकर, अंकुश. (२०२०, जून १८). दूरध्वनिय साक्षात्कार. (रिकॉर्डिस्ट)

भावे, तन्मय.(२०२०, जून २०). दूरध्वनिय साक्षात्कार. (संगीत निर्देशक)

प्रकाशन, संस्कार.(२०२०, जून १ ९). दूरध्वनिय साक्षात्कार. (प्रकाशक)